# From the Editor's Pen

This is a universal and fundamental truth that the character of the people, their beliefs, and their inherent tendencies are rooted in their language. Whatever the imagination, whether it is simple or complicated, it is tied to language, geography, and culture. And one truth is also that no two languages share the same context.

In such a scenario, a profound question arises—"Can we translate a culture, its world-view, and its consciousness?" Where not only language stands as a communicative heritage, but imagination also comes forth as a cultural heritage. Moreover, there is the cumulative responsibility of using these heritages. So, how can this translation be done? Can we, on behalf of the original reader, express the immediate value in another language? Can the translation of Greek mythological works and Indian epic tales be done while preserving their ancient values and paradigms?

Finding the answer to these questions is difficult, but presenting this issue before readers in an insightful manner from an editorial perspective would be the right approach. In such a case, a bridge between the work and its culture must be established. What would the structure of this bridge be like, and should bridges be built between languages? The answer to these questions lies in the belief that translation is merely a medium. Through this medium, we sit at the heart of the original author and present their creativity in a new culture, a new language. The most important task in this endeavor is to preserve the essence of the original literary work. However, this task also urges the translator to refrain from attempting to put their own thoughts in the shoes of the original author.

The purpose of translation is also significant as it serves as an instrument for personal satisfaction and academic achievements. In this process, bridges can be created between different cultures and their own cultures. Through this, students from other countries can be introduced to our culture. Translation often faces the challenge of representing emotional expressions and unspoken thoughts. The success of translation depends on how it strengthens the bond between the reader and the text.

The primary objective of this e-journal is the preservation and promotion of the diverse dialects and languages of the Jammu region, as well as the various cultures of this area, through literary translation. Our goal is to provide an engaging platform for enthusiastic literary translators to share their thoughts and contribute significantly to the field of literary translation. As the editor of this journal, my continuous endeavor will be to uphold the standards of excellence, ensuring that we contribute meaningfully to the field of literary translation.

# संपादक की बात

यह सर्वविदित और प्रामाणिक सत्य है कि लोगों का चरित्र, उनकी मान्यतायें और उनकी नैसर्गिक प्रतिभा का मूल, उनकी भाषा में ही निहित होता है। कल्पना कैसी भी हो- अल्पना सी सुंदर हो या जल्पना सी कर्कश, वो तो भाषा, भूगोल और संस्कृति में जड़ी होती है। और एक सच यह भी है कि कोई भी दो भाषायें एक ही संदर्भ को साझा नहीं करती हैं।

ऐसे में हमारे समक्ष, यह यक्ष प्रश्न खड़ा हो जाता है कि- "क्या हम एक संस्कृति, उसके विश्व दृष्टिकोण, उसके दर्शन का अनुवाद कर सकते हैं? जहां न केवल भाषा एक संप्रेषणीय धरोहर के रुप में है वरन् कल्पना भी सांस्कृतिक धरोहर के रुप में सामने आती है। उससे भी अधिक इन धरोहरों के उपयोग का संचयी प्रभाव भी है। तो इसका कैसे अनुवाद किया जा सकता है? क्या हम एक मूल पाठक के लिये, उसके सामने प्रस्तुत तात्कालिक मूल्य को दूसरी भाषा में व्यक्त कर सकते हैं?क्या ग्रीक मिथकों और भारतीय पौराणिक गाथाओं का अनुवाद, उनके विशद विवरण और पावन कल्पनाओं को अक्षुण्ण रखते हुये किया जा सका है?

इन प्रश्नों का उत्तर खोजना दुष्कर है, लेकिन भावाभिव्यक्ति कि इस समस्या को सामने रखकर, पाठकों के प्रति अपने लेखकीय धर्म से मुख मोड़ना भी कितना सही होगा? ऐसे में कर्म और धर्म के मध्य कोई सेतु तो बनाना होगा। ऐसे सेतु की संरचना कैसी होगी और क्या सेतुबंध भी बनाने होंगे?

इन प्रश्नों का उत्तर इस मान्यता में अंतर्निहित है कि अनुवाद में मस्तिष्क एक माध्यम मात्र होता है। इस माध्यम के सहारे आप मूल साहित्यकार के हृदय में बैठकर उसकी रचनाशीलता को नयी संस्कृति, नयी भाषा में प्रस्तुत करते हैं। इस साधना की सबसे महत्वपूर्ण चुनौती साहित्य के मूल स्वर को बचाये रखने की है। लेकिन यह चुनौती इस मर्यादा के पालन का आग्रह भी करती है कि कोई अनुवादक, किसी साहित्यकार के जूते में अपने पांव अड़ाने जैसा तो प्रयास तो नहीं करने लगा है।

अनुवाद का उद्देश्य स्वांतः सुखाय और अकादमिक उपलब्धियों के अतिरिक्त शैक्षिक उपकरण के रुप में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस प्रक्रिया में किसी अन्य संस्कृति और अपनी संस्कृति के मध्य सेतु भी बनाया जा सकता है। इसके माध्यम से दूसरे देशों के छात्रों को अपनी संस्कृति के शिखर से परिचित कराया जा सकता है।

अनुवाद, कई बार साहित्य में उपस्थित भावनात्मक अभिव्यक्ति और अनभिव्यक्ति को पुनः स्थापित करने का संघर्ष होता है। अनुवाद की सफलता इस तथ्य पर निर्भर करती है कि यह कैसे पाठक और पुस्तक के बीच एक सक्रिय संवेदी संबंध को बढ़ावा देता है।

इस ई-पत्रिका का प्रमुख उद्देश्य साहित्यिक अनुवाद के माध्यम से जम्मू क्षेत्र की विभिन्न बोलियों और भाषाओं के साथ-साथ इस क्षेत्र की विभिन्न लिपियों का संरक्षण और संवर्द्धन है।

हमारा लक्ष्य है कि अनुवाद के उत्साही बौद्धिकों के लिये एक ऐसा मंच प्रदान किया जाये, जहां वे अपने विचारों को साझा कर सकें और साहित्यिक अनुवाद के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान कर सकें। इस पत्रिका के संपादक के रुप में मेरा निरंतर यह प्रयास रहेगा कि उत्कृष्टता के मानकों को बनाये रखा जाये, जिससे हम साहित्यिक अनुवाद के क्षेत्र में सम्मानजनक योगदान दे सकें।